

हे दयामय दीन बंधू तुम जगत आधार हो ।

मुरली वाले मोहना भक्तों के रखवार हो ॥

करुणा सागर कृपा मूरति जन हितकारी हो सदां

सब गुणों के धाम तुम अतिशय चरित्र उदार हो ॥१॥

भवसिंधु तरने के लिए तेरा नाम है नौका बड़ी

जिसने तेरा सिमरन किया उसका होता उद्धार है ॥२॥

विपति में जिसने पुकारा उसकी विपत्ती दूर की

विपति नाशन है हरी कीरति तेरी अपार है ॥३॥

द्रोपदी की लात राखी चीर बढ़ा कर है हरी

सांवल शाह हो नरसी की हुण्डी कीनी स्वीकार है ॥४॥

सब ओर से निराश हो अब शरण तेरी आ पड़ी

तेरे चरण सरोज में वन्दन बारम्बार है ॥५॥